B.A III

धार्मिक चेतना V paper 7.6.21

धर्म में ईश्वर का महत्वपूर्ण स्थान है। ईश्वर ही धर्म का आधार है। धार्मिक चेतना का विश्लेषण करने के उपरान्त विदित होता है कि धर्म मूल रूप से मानव का मनोभाव धर्म ही होता है धार्मिक चेतना का उद्गम धर्म प्रवृत्ति में होता है। साधारणतः चेतना शब्द का अर्थ ज्ञान होता है परन्तु यह चेतना का संकीर्ण प्रयोग है आधुनिक मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि मन के तीन पहलू हैं विचार, भावना, और इच्छा। जे. एन. सिन्हा ने मन के इस स्वरूप के सम्बन्ध में कहा है कि चेतन जीवन की इकाई में विचार, भाव, इच्छा आदि किसी वस्तु के प्रति तीनों संश्लिष्ट रहते हैं

धार्मिक चेतना के तीन पहलू हैं ① ज्ञानात्मक ② भावनात्मक ③ क्रियात्मक

ज्ञानात्मक पहलू धर्म का वह पहलू है जो मानव को किसी शक्ति के प्रति चेतनशील बनाता है भावनात्मक वह पहलू है जो मानव में उस सत्ता के प्रति प्रेम आत्म समर्पण तथा निर्भरता का भाव फूँकता है। साथ ही क्रियात्मक पहलू मानव को शक्ति के प्रति क्रियाशील बनाता है। मानव अपने कर्मों के द्वारा उस सत्ता को प्रसन्न करने का प्रयास करता है जिसके फलस्वरूप क्रिया पद्धति का विकास होता है।

मानव एक विवेकशील प्राणी है। मानव के पास अद्वितीय तथा इच्छा है। मानव की तुलना पशुओं से नहीं की जा सकती। जब भी मानव कोई कार्य करता है तब उसके बारे में विचार करता है। कर्म करने के पूर्व उसके कर्म लक्ष्य, सीमा, लाभ-इत्यादि विषय का चिन्तन करता है। धर्म के लिए तीनों पहलू अनिवार्य है। धर्म सम्पूर्ण मानव की प्रतिक्रिया है अतः धर्म के तीनों पहलू का उचित स्थान देना आवश्यक है

धर्म का आधार भावना है इसलिए धार्मिक चेतना ज्ञान पर ही आधारित नहीं है हीगेल, शंकर, तथा मैक्समूलर इस मत के पोषक है इन्होंने तर्कों को ज्ञानात्मक पहलू का ही कहा गया है

मनुष्य ही धार्मिक क्यों है, मानव विवेक ही ऐसा चीज है जो उसे धार्मिक बना डालता है। पशुओं में विवेक का अभाव है। शेष भावनाएं समान है पशु भी मानव की तरह सुख और दुख की पीड़ा महसूस करते है लेकिन विवेकशून्य होने के कारण पशु में धार्मिकता का अभाव है इस लिए धार्मिक चेतना में तर्क की अहम भूमिका है

अतः हम कह सकते है कि धर्म का आधार न सिर्फ ज्ञान न सिर्फ भावना और न सिर्फ भावना ही है सच पूछा जाए तो इसमें तीन का समन्वय है जिस प्रकार विचार भाव और संकल्प मन के तीन अंग है ठीक उसी प्रकार धार्मिक चेतना के तीनों अंग है और तीनों की प्रधानता है किसी एक को ग्रहण करना तथा दूसरे को उपेक्षा करना गलत है

धर्म मानव की सभी समस्याओं का हल खोजने का प्रयास करता है। सामाजिक और राजनैतिक सम्बन्धों के बाद जब मानव अपने को असहाय समझता है तब धर्म आश्वासन और शक्तिहीन मानव को शक्ति प्रदान करता है। धर्म विश्वासों को जन्म देता है।

प्रो० मैक्स मूलर ने कहा है कि धर्म का इतिहास मानव के विकास का इतिहास है। अतः धार्मिक चेतना की व्याख्या करके सम्पूर्ण धर्म का विवरण मानव-शास्त्र से करना समीचीन जान पड़ता है।

धार्मिक चेतना के अध्ययन के उपरान्त ऐसा लगता है कि इसके लिए तीन आवश्यक तत्व – बुद्धि, अनुभव और क्रिया का होना अत्यन्त आवश्यक है इनमें से किसी एक के अभाव में धार्मिक चेतना का होना असम्भव है और इसी प्रकार सभी धर्म दार्शनिकों ने इसकी महत्ता स्वीकार की है। परन्तु डॉ० ल्यूबा सभी दार्शनिकों से भिन्न दार्शनिक चेतना की व्याख्या अलग किया है इन्होंने धार्मिक चेतना के लिए अबौद्धिक (Non-rational) तत्व को एक मात्र आधार माना है।